गुगनराम एजुकेशनल एण्ड सोशल वैलफेयर सोसायटी (रजि.) द्वारा प्रकाशित

संस्थापक संपादक
स्व. फतेहचंद

SHODH SAMALOCHAN

शोध-समालोचन (त्रैमासिक)

AN INTERNATIONAL PEER REVIEWED, REREREED MULTIDISCIPLINARY & MULTIPLE LANGUAGES QUARTTERLY RESEARCH JOURNAL

UGC Valid Journal (The Gazette of India, Extraordinary Part III, Section 4, Dated July 18, 2018)

वर्ष-11, अंक-4 अक्टूबर-दिसम्बर 2024 आईएसएसएन : 2348-5639

संपादक
• डॉ. नरेश सिहाग 'बोहल' एडवोकेट

उप-संपादक
• डॉ. सुमन रानी

कार्यकारी संपादक
• डॉ. वर्षा रानी

सह-संपादक
• डॉ. लता एस. पाटिल,
• डॉ. सुलक्षणा अहलावत

प्रबंध संपादक
• डॉ. मुकेश 'ऋषिवर्मा'

अक्षर संयोजन
• मो. सलीम

कानूनी सलाहाकार
• डॉ. रामफल दलाल, एडवोकेट
• अजीत सिहाग, एडवोकेट

सलाहकार सम्पादक मंडल
• डॉ. निशीथ गौड, आगरा
• डॉ. ऊषा रानी, शिमला
• डॉ. गोविन्द सोनी, श्रीगंगानगर
• डॉ. सुषमा रानी, जीन्द
• डॉ. मुदस्सिर अहमद भट्ट, श्रीनगर
• डॉ. दीपशिखा, पटियाला
• डॉ. गौतम कुमार साहा, दरभंगा
• श्री राकेश शंकर भारती, युक्रेन
• डॉ. के.के. मल्होत्रा, कैनेडा
• डॉ. आशीष कुमार दीपांकर, मेरठ
• डॉ. कामिनी कौशल, गाजियाबाद
• डॉ. रवि शंकर सिंह, आरा
• डॉ. संजय कुमार, रांची
• डॉ. संतोष कुमार भगत, रांची

1. 'शोध-समालोचन' का प्रबंधन और संपादन पूर्णतः अवैतनिक है।
2. 'शोध-समालोचन' में प्रकाशित लेखों में व्यक्त विचार संबंधित लेखकों के अपने हैं। उनके प्रति वे स्वयं उत्तरदायी है।
3. पत्रिका से संबंधित प्रत्येक विवाद का न्याय क्षेत्र भिवानी न्यायालय ही मान्य होगा।
4. प्रकाशक/ स्वामी डॉ. नरेश सिहाग, एडवोकेट ने सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से मुद्रित करवाया।

'शोध समालोचन' की सदस्यता का शुल्क भुगतान राष्ट्रीयकृत बैंकों द्वारा सीधे ट्रांसफर या जमा किया जा सकता है। बैंक का विवरण निम्नानुसार है–**बैंक :** PUNJAB NATIONAL BANK **Branch :** Yamuna Vihar, Delhi-110053 **IFSC :** PUNB0225600 **Account Holder :** SANIA PUBLICATION **Current Account No.** 2256002100405546 भुगतान की मूल रसीद, शोध -पत्र पत्रिका की ई-मेल पर भेजना अनिवार्य है।

नोट :- इस अंक की प्रिंट कॉपी खरीदने के लिए सानिया पब्लिकेशन, दिल्ली-110094 से सम्पर्क करें मो. 9818128487

मूल्य : 600/- रु. एक प्रिंट प्रति वार्षिक 2000/- रु.

A Study Of The Challenges Faced By Women Working In The Service Sector In The Socio-emotional Development Of Adolescents 99
Apurva Singh , Dr. Krapal Singh
तुलसीराम की आत्मकथा में दलित चेतना : (मुर्दहिया और माणिकर्णिका के विशेष संदर्भ में) एक विश्लेषण 106
मिथुन लहेरी
Consumer Data Protection and Privacy Rights in India: A Comprehensive Analysis 109
Dr. Nidhi Sharma
भारतीय साहित्य में अनुवाद की भूमिका 115
डॉ. केशव क्षीरसागर
ग्रामीण महिलाओं की शिक्षा में सरकारी नीतियों एवं तकनीकी साधनों का सहजीवी प्रभाव: एक समाज... 122
तबस्सुम
वैश्विकरण के दौर में साहित्य में वर्णित दलित चेतना 128
Dr. Salim Banadar
'मैं पायल' उपन्यास में वर्णित किन्नर जीवन का आत्मसंघर्ष 131
Rahul Mahato, Vikash Shaw
Musical Effects on Human Body and Mind 137
Anu Saxena, Dr. Kaumudi Kshirsagar Barde
महानगरों में नारी 141
R.D.NIRMALA
नमिता सिंह के कथा साहित्य में चित्रित धर्म का सांप्रदायिक स्वरूप 145
फूला देवी
चित्रकला के क्षेत्र में विज्ञान और प्रौद्योगिकी की भूमिका - एक परिचय 150
सरिता भांभू, डॉ. सोनिया रानी
The Use of Technology in Modern Criminal Investigations in India 154
Hema Shrivastava
'मुझे पहचानो' : नारी अस्तित्व की संघर्ष गाथा 160
डॉ. उमा मेहता
वैदिक काल में भौगोलिक चिंतन 164
डॉ. सुरेन्द्र चौधरी / डॉ. राजेन्द्र प्रसाद खीचड़
ENVIRONMENTAL POLLUTION 176
Dr. Monika Rathore
मीरांबाई की स्त्री-चेतना : एक दृष्टि 180
डॉ. माया गोला
समकालीन हिन्दी उपन्यास और आदिवासी जीवन के विविध परिप्रेक्ष्य 185
रिया श्रीवास्तव
सामाजिक लेखा परीक्षा, जवाबदेही एवं पारदर्शिता सोसायटी (राजस्थान के संदर्भ में) 188
डॉ. नूरजहाँ, वेदप्रकाश बैरवा
भारत में वैदिक कालीन शिक्षा व्यवस्था 193
संतोष कुमार सिंह
Breeding Strategies for Developing Climate-Resilient Ornamental Plants in Etah 202
Bhawna Kumari

SHODH SAMALOCHAN ISSN : 2348-5639
An International Peer Reviewed, Refereed Multidisciplinary & Multiple Languages Quarterly Research Journal

महानगरों में नारी

R. D. NIRMALA
Research Scholar
Department of Hindi, School of Languages, Vels Institute of Science, Technology & Advanced Studies(VISTAS)
Email id : nirmalard03@gmail.com
GUIDE: **Dr. ANURADHA PAKALAPATTI**
Department of Hindi, School of Languages, Vels Institute of Science, Technology & Advanced Studies(VISTAS)

प्रस्तावना

महानगरों में नारियों की परिस्थिति अलग होती है। नारियों के निम्न वर्ग, मध्य वर्ग और उच्च वर्ग की परिस्थितियाँ अलग-अलग प्रकार के होते हैं। निम्न वर्ग के नारियों को संघर्षों से जूझना पड़ता है। मध्य वर्ग के नारियों को कुछ भी करने से पहले हज़ार बार सोचना पड़ता है। उच्च वर्ग के नारियों को किसी भी चीज़ के लिए न तो संघर्ष करना पड़ता है, न ही सोचना पड़ता है। उन्हें सही समय पर सब कुछ मिल जाता है। मध्यवर्गीय नारियाँ अपने ज़रूरतों से पहले अपने परिवार के बारे में सोचती है। वह खुद के बारे में बिल्कुल नहीं सोचती है। शिक्षा का महत्व आरंभिक काल की नारी उतना नहीं जानती, लेकिन आधुनिक युग की नारियों के हृदय शिक्षा के कारण साहस से भर गया है।

नारी जीवन

महिलाएँ अपना पूरा जीवन अपने परिवार के लिए ही जीते हैं। "ज़िंदगी में नारी की कल्पना कितने ढंग से की गई है उसे सार्थकता प्रदान करने के लिए कभी मानवी तो कभी दानवी चित्रित किया गया। बेहद रोमानी क्षेत्रों में वह प्रेरणापद और खुद हो जाती है।"

उपर्युक्त पंक्तियाँ लेखिका कृष्णा अग्निहोत्री के उपन्यास 'बात एक औरत की' में यह दिखाते हैं कि पुरुष, स्त्री को मनोरंजन की साधन समझता है। नारी के अधिकारों को छीन कर उसे सिर्फ भोग की वस्तु बनाकर रखा है।

ममता कालिया के उपन्यास 'बेघर' की संजीवनी को परमजीत ने भोग कर छोड़ देता है। नारी को माँ मानने वाले हमारे देश में महिलाओं के ऊपर अपना अधिकार जताते हैं।

'शह और मात' उपन्यास में लेखक राजेन्द्र यादव अपर्णा के पति उसको शारीरिक कष्ट देता है। अपर्णा के पति उसको पीटता भी था। अपर्णा अपने भाई से कहती तो उसके पति बहुत गुस्सा दखाता और उसका अपमान करता है। उसका पति उसके साथ बहुत बुरा व्यवहार करता है। अपर्णा इस परिस्थितियों के कारण अपने पिता के घर चली जाती है अपर्णा का पारिवारिक जीवन उसके पति के अधिकारों और अत्याचारों के कारण बिना प्राण का हो गया है।

हमारे देश के लंबे समय तक महिलाओं को भोग के वास्तु मानते थे। पति के अत्याचारों के विरुद्ध कुछ नहीं किया।

आज के महानगरीय नारी, परंपराओं और अंधविश्वासों का विद्रोह करती है। शकी स्वभाव के पती से पत्नी विद्रोह करती है। वह आर्थिक रूप से स्वतंत्र होकर उसका विद्रोह करती है। लेकिन आजकल की स्थिति वैसी नहीं है कि स्त्रियाँ तलाक लेकर अपनी जिंदगी खुशी से जी रही है।

नवीन युग की नारियाँ

नवीन युग में महिलाएँ सभी तरह के प्रशिक्षण पाकर घर से बाहर निकलती है। नारी अपनी क्षमताओं को व्यक्त कर अपने लिए एक स्थान प्राप्त करती है। इस युग में एक ओर नारी प्रगति की तरफ आगे बढती है और दूसरी ओर उसे समस्याओं एवं बाधाओं का सामना करना पड़ता है। आज महिलाएँ सभी क्षेत्र में कार्य करती हैं। स्त्री स्वतंत्रता के साथ शिक्षा के द्वारा बदलती परिस्थितियों को पहचानकर जागरूक हो रही है। महानगरों में नारियों की स्वाधीनता में यह परिवर्तन अधिक दिखाई दे रही है। शिक्षा नारियों को एक नया जीवन दिया है। महिलाओं की सोच - समझ और विचार, शिक्षा के कारण बढ गया है। नारी शिक्षा से रूढियों का विरोध करना शुरू किया। महानगरों के शिक्षित या अशिक्षित नारी आर्थिक दृष्टि से भी आत्मनिर्भरता के साथ है। इन असुरक्षित महानगरों में नारियाँ अत्यधिक अत्याचारों का सामना करना पड़ता है। लेकिन फिर भी वह इसके खिलाफ अपनी आवाज़ उठा रही है। आर्थिक स्वतंत्रता ने नारियों के आत्मविश्वास को और भी बढ़ाया है। 21 वीं सदी के आरंभ से समाज, धर्म, विवाह, नौकरी आदि क्षेत्रों में नारी स्वतंत्रता से निर्णय लेती है। आधुनिक नारी सफलता प्राप्त करके सभी क्षेत्रों में अपनी योग्दान दे कर आगे बढ रही है। नारी को एक ओर प्रगति की सोपान पर चढ़ रही है। दूसरी ओर अपने समस्याओं और बाधाओं का सामना कर रही है। आज की नारियाँ चाहे गाँव के हो या नगर के अपने पर हो रहे अन्याय और अत्याचारों का खुलकर विरोध कर रही है।

कामकाजी नारी

साहित्य में नारी के विभिन्न रूप प्रचलित है। कामकाजी महिला एक तरफ घर की समस्या और दूसरी तरफ कार्यक्षेत्र की समस्याओं का सामना करती है। कार्यक्षेत्र में सुरक्षा का अभाव है। सामान्य रूप से आजकल घर् में या घर से बाहर निकलकर अर्थोपार्जन करने वाली शिक्षित और अशिक्षित नारियों को कामकाजी महिलाएँ कहलाई जाती हैं। नारी स्वावलंबी होकर अपने घर की आर्थिक परिस्थितियों को सँभालने निकल पड़ी है। आज की नारी शिक्षित और आत्मनिर्भर होने के कारण घर तथा कार्यक्षेत्र में काम करती है। कामकाजी नारी, घर और काम के जीवन दोनों को अपने आत्मनिभर के साथ करती है। कामकाजी महिला सिर्फ पैसा कमाने के लिए नहीं पर अपनी योग्यता का उपयोग करना चाहती है। कामकाजी महिला शिक्षित होकर स्वावलंबी बनना चाहती है। महिलाएँ कामकाज के द्वारा सिर्फ परिवार की आर्थिक स्थिति को बदलने नहीं बल्कि वह किसी पर बोझ बनकर नहीं रहना चाहती है। वह स्वतंत्र होकर अपने जिंदगी को प्रगति की ओर बढ़ाना चाहती है। शिक्षा प्राप्त करके नौकरी करने से समाज में प्रगति पाने के रास्ते में उसको बहुत सारी समस्याओं एवं कठिनाइयों का सामना करना पड़ता है। आज नारी समाज का अंग बन गई है। संसार में अपने पहचान और सामान से रहना चाहती है। कामकाजी महिला को बाहर काम के माहौल में रहने से अपनी जिंदगी में बहुत बदलाव आया है। वह अपना निर्णय खुद ले सकती है। शिक्षित होने के कारण चेतनशील बन जाती है। अशिक्षित महिलाओं को यह क्षमता नहीं होती है। लेकिन आजकल वह भी पुरुष की अनुगामिनी न बनकर अपना खुद का निर्णय खुलकर प्रकट करती है। सहगामी बनने में ही अपना सम्मान समझती है।

समस्याएँ

शिक्षा न मिलने के कारण आर्थिक रूप से मुश्किलों का सामना करना पड़ता और पुरुष से निर्भर होना पड़ता है। आर्थिक समस्या के कारण स्त्री को शिक्षा प्राप्त नहीं होती है। कामकाजी महिलाओं के घर में उनके पति और घर के अन्य सदस्यों का सहायता मिलनी चाहिए। कार्यालय में काम करने वाले कामकाजी महिलाएँ के बहुत बड़ा समस्या यह है कि काम के

कारण अपने बच्चों को अपना पूरा समय नहीं दे पा रहे हैं। यह दुख काम करने वाली शिक्षित या अशिक्षित, ग्रामीण या महानगरीय, निम्न, मध्य या उच्च वर्ग के हर महिलाओं को होता है। काम के लिए घर से बाहर जाने वाले कामकाजी महिलाओं के बच्चे घर में अकेले रहने के कारण कुछ बच्चे बिगड़ जाते हैं स्त्रियाँ अपने बच्चों का पालन पोषण समय के अभाव के कारण बच्चों के साथ रहकर नहीं कर पा रही है। कामकाजी महिलाओं को अनेक प्रकार के कठिनाइयों और समस्याओं का सामना करती है, दफ्तरों में काम करने वाले शिक्षित या अशिक्षित कामकाजी स्त्रियों को यौन उत्पीड़न की समस्या का सामना करना पड़ता है। उसको सम्मान नहीं मिलती है। खासकर पुरुष सहकर्मियों के साथ काम करने वाली स्त्रियों को अनेक समस्याओं और आपत्तियों का समाना करना पड़ता है। बड़े-बड़े कार्यालयों में महिलाएँ काम करती है। उसके वेशभूषा कपड़े पहनने के तरीके पर सबका ध्यान चाहे कैसे भी उम्र के कर्मचारी क्यों न हो उसको देखते हैं। अगर उससे कोई गलती हो जाती तो उसकी नौकरी से निकलने की धमकी भी दी जाती है। कार्य क्षेत्र में पुरुष अधिकारियों का शोषण भी होता है। नगरों में रहने वाले नारियों के लिए अनेक समस्याएँ उत्पन्न होते हैं। कामकाजी महिलाओं को उन समस्याओं और परेशानियों का सामना करना पड़ता है। स्त्रियों को हमेशा पुरुष से निम्न स्थान दिया जाता है। आजकल महिलाएँ पुरुष से उच्च स्तर में काम करते हैं। तब पुरुष नारी के आदेशों का पालन करना ही तुच्छ समझता है। 'मैं अपराधी हूँ', 'कुमारिकाएँ', 'बात एक औरत की', 'नानी अम्मा मान जाओ' आदि उपन्यासों में ऐसी अनेक महिलाओं का चित्रण हुआ है। स्वतंत्र, आर्थिक और स्वावलंबी होने के बावजूद आजकल की नारियाँ आधुनिकता में फँसकर तनाव में जीती है। आजकल नारी शिक्षित और आत्मनिर्भर होकर घर और कार्य क्षेत्र दोनों को अच्छी तरह निभा रही है। कामकाजी महिलाओं को घर और कार्य दोनों को समान महत्व देना चाहिए। यह बहुत कठिन है। अगर घर और कार्य में किसी एक को महत्व देकर दूसरे को छोड़ देंगे तो समस्याओं का सामना करना पड़ता है। उन समस्याओं को सामना करने के लिए उस समय सहनशीलता और आत्मविश्वास की आवश्यकता है। कामकाजी महिलाओं को बाहर और घर दोनों तरफ में होने वाले अनेक कठिनाइयों और मुश्किलों का सामना करना पड़ता है। कई महिलाएँ घर में पति और बाहर सहकर्मियों का सहायता न मिलने के कारण तनाव ग्रस्त हो जाती है। पर हिम्मत नहीं हर हारती है। आजकल की कामकाजी महिलाएँ अपने जीवन में होने वाले कठिनाइयों का सामना कर लेती है कोई भी स्थिति में अपना काम छोड़ना पसंद नहीं करती है। दृढ़ बनना चाहती है। मुश्किलों का सामना कर आर्थिक रूप से दृढ़ बनना चाहती है। कामकाजी महिलाओं के परिवार में महिलाओं की शोषण का कारण भी बनता है। आर्थिक रूप से कमजोर परिवारों में अविवाहित कामकाजी स्त्रियों को अपने स्वार्थ के कारण अपने पास ही रखना चाहते हैं। 'कुमारिकाएँ' उपन्यास में वंदना को वैसा ही किया जाता है।

समाधान

शिक्षा से ही नारी का आत्मविश्वास बढ़ता है। शिक्षा की सहायता से घर, परिवार और अपना काम और कार्यस्थल के होने वाले सारे मुश्किलों को संभाल लेती है। कामकाजी महिलाएँ अपने बच्चों की सुरक्षा एवं देखभाल को लेकर बहुत चिंतित रहती है। इसलिए महिलाओं को परिवार के सदस्यों की मदद चाहिए। घर में पुरुषों को भी सहायता करनी चाहिए। महिलाओं की सुरक्षा में जनता और सरकार दोनों को मिलकर काम करना चाहिए। स्त्रियों को शिक्षा और समान अधिकार देना चाहिए। उनकी पढ़ाई के साथ - साथ उनके कौशलों एवं धैर्य को बढ़ाने वाले कुछ कार्यक्रम के द्वारा प्रोत्साहन देना चाहिए। महिलाओं को कानून की जानकारी होनी चाहिए। महिलाओं को शिक्षा का अभाव, यौन उत्पीड़न, लैंगिक भेदभाव, लैंगिक वेतन अंतर जैसी समस्याओं का सामना करना पड़ता है। इन सब में बदलाव आना चाहिए।

नारी की सुरक्षा

भारत हमारे संस्कृति के लिए विख्यात है। हमारे देश में स्त्रियों को आदर, सत्कार और सम्मान दिया जाता है। भारत में स्त्रियों की सुरक्षा का महत्व दिया जाता है। महिलाओं को समान स्वतंत्रता है, वह चाहे कभी भी कहीं भी जा सकती है।

लेकिन अब हमारे भारत देश के महानगरों में जो भी मुश्किलें है, उसके अलावा महिलाओं की सुरक्षा का भी सावल है। उनकी सुरक्षा का अभाव है। सुरक्षा मानकों का पालन तो करते हैं पर उसके बावजूद भी अपराध होते ही है। महानगरों के हर जगह में अपराध की घटनाएँ और भी अधिक होती जा रही है। इस परिस्तिथि को बदलने में सरकार और कानून के साथ-साथ हर इंसान को मानवता के साथ अपना योग्दान देना होगा। सरकार ने महिलाओं की सुरक्षा के लिए सहायता प्रणाली सुरक्षित शहर परियोजनाएँ आदि किया जा रहा है। महिलाओं को अपनी सुरक्षा के तरीके सीखना चाहिए और सरकार के नियमों की जानकारी होनी चाहिए।

निष्कर्ष

नारी आर्थिक रूप से आत्मनिर्भर है। मुश्किल परिस्तिथियों में भी वह हार नहीं मानती और अर्थार्जन कर स्वाभिमान के साथ अपना जीवन यापन करती है। घर, परिवार और बच्चों की ज़िम्मेदारी अथ्वा कार्यक्षेत्र की ज़िम्मेदारी वह अकेली निर्वाह करती है। नारी निर्भय होकर समाज से टक्कर लेती दिखाई देती है और समाज से अपना विशिष्ट पहचान बनाती है। अपनी योग्यता के अनुसार काम करके आर्थिक स्वतंत्रता के साथ अपने आदर्शों पर जीती है। अभी भी बच्चों की, पढ़ाई करने वाले लड़कियों की और काम करने वाले महिलाओं की सुरक्षा की स्थिति दयनीय है। सभी की समस्याओं का समाधान कानून के साथ-साथ संसार की समझदारी से होनी चाहिए। हमारे देश में सबको समान अधिकार दिया है। स्वतंत्र भारत में बच्चों, लड़कियों और महिलाएँ को और भी सुरक्षित रहने के लिए हमारे भारत सरकार को खत्म उठाना चाहिए।

संदर्भ ग्रंथ सूची

1. डॉ. शशि बाला, कामकाजी नारी, लोक संस्कृति प्रकाशन, नई दिल्ली 2020
2. डॉ. अजमेर सिंह काजल, उपन्यासकार राजेंद्र यादव, संजय प्रकाशन, नई दिल्ली 2015
3. गोस्वामी, महिला एवं बाल विकास, पेंटर पब्लिशर्स, जयपुर 2003
4. रवीन्द्र कुमार पाठक नारीवादी अर्थषास्त्र के प्रयोक्ता अमर्त्यसेन, वर्तमान साहित्य, मार्च, 2008
5. रेखा कस्तवार, स्त्री चिंतन की चुनौतियां, राजकमल प्रकाशन 2009
6. संध्या गंगराडे, आज की कविता में नारी अस्तित्व, 'सम्मेलन पत्रिका
7. त्रिपाठी आर, कामकाजी महिलाएँ वास्तविक स्थिति, खुशी पब्लिकेशन, नई दिल्ली 2011
8. एन. रूवाली प्रियंका, कु. वन्दना, कामकाजी महिलाओं की परिस्थिति एवं समस्याएं : एक समाजशास्त्रीय अध्ययन, जरनल ऑफ आचार्य नरेन्द्र देव रिसर्च इन्स्टीट्यूट।
9. कुमार, राधा, स्त्री संघर्ष का इतिहास, वाणी प्रकाशन, नई दिल्ली।
10. कुसुम मितल, कानून और समाज, वर्तमान साहित्य, जून 2008